एक दूसरे के अधीन होना

(5:21)

मैं ''बिज़्लिकल हरमिन्युटिज़्स'' का विषय पढ़ाया करता था,जो बाइबल की व्याज़्या के विज्ञान के लिए एक सजावटी नाम है। इसमें छात्रों को सिखाया जाता है कि यह कैसे देखना है कि बाइबल किसी विषय पर ज़्या कहती है, उसका ज़्या अर्थ है और वह बात उन पर कैसे लागू होती है। बाइबल की कुछ बातों को समझने के लिए प्रयास करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, ''चोरी न करना'' की आज्ञा बड़ी स्पष्ट है। इसका अर्थ निकालने के लिए हमें इसे हरमिन्युटिज़्स के कोर्स में शामिल करने की आवश्यकता नहीं है।

दैनिक जीवन में हम जितनी व्याज़्याएं करते हैं, उनमें से कुछ आसान होती हैं। सड़क पर 'रुकिए' लिखा पढ़कर उसकी व्याज़्या करने की आवश्यकता नहीं होती, ज़्योंकि हम इसे पढ़ते ही समझ जाते हैं कि उसका अर्थ ज़्या होगा। अन्य परिस्थितियों में इसकी व्याज़्या करने की आवश्यकता पड़ सकती है। न्यूज़्लियर फिज़िज़्स पर किसी किताब को पढ़ने तथा समझने के लिए प्रयास करना पड़ता है।

अब एक आयत, 5:21 पर विचार करते हैं। इस आयत को समझना कठिन नहीं है। हमारे सामने चुनौती इसे समझने की नहीं बल्कि इसके अनुसार जीवन बिताने की है।

पौलुस की शिक्षा के संदर्भ में इसका अर्थ ''आत्मा से परिपूर्ण'' होना लगता है। 5:18 में पौलुस ने कहा, ''दाखरस से मतवाले न बनो, ज़्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।'' फिर पौलुस ने आत्मा से परिपूर्ण जीवन के कुछ परिणाम बताए।

पहला, आत्मा से परिपूर्ण जीवन एक दूसरे को आत्मिक ढंग से संगति की ओर बढ़ाता है। गाकर हम ''आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत'' ही गा रहे होते हैं (5:19क)। दूसरा परिणाम मन में प्रभु के लिए गाना होता है। तीसरा हर बात के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना (5:20) और चौथा, परिणाम आयत 21 में मिलता है। यह बात रुकने के संकेत की तरह है जिसे समझने के लिए अधिक प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें दस स्पष्ट शज़्द हैं: ''और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।''

एक स्पष्ट आज्ञा

पौलुस ने दृढ़ता से कहा कि आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ दूसरों के लिए अपनी इच्छाओं का त्याग करना है। ''आधीन रहो'' के लिए यूनानी शज़्द[1] का अनुवाद मूलत: एक सैनिकों के लिए था। इसका अर्थ था ''रैंक में छोटे होना।'' आत्मा से परिपूर्ण मसीही अपने आप को एक दूसरे से छोटा मानते हैं। वे अपने ही ढंग से कार्य करने को मुद्दा नहीं बनाते।

हम सब जानते हैं कि इसका अर्थ ज़्या है। हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती इसे व्यवहार में लाने की है, ज़्योंकि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो हमारे दिमाग में अपने अधिकारों के लिए लड़ने का विचार डालता है। हमें बताया जाता है कि इससे पहले कि कोई दूसरा ले ले, हमें सारा झपट लेना चाहिए।

मेरा पालन-पोषण फार्म में नहीं हुआ, परन्तु हो सकता है कि आपका हुआ हो। यदि आपके पास मुर्गियां थीं, तो आप जानते हैं कि फार्म में मुर्गियों की फीड का ढेर बना होता है। ढेर पर सबसे ऊपर चढ़ी मुर्गी आराम से बिना किसी भय के दाने चुग लेती है। सबसे नीचे वाली मुर्गी को बड़े ध्यान से चुगना पड़ता है। इसलिए ऊपर वाली मुर्गी से लेकर नीचे वाली मुर्गी तक सब की एक लाइन बन जाती है। यदि कोई दाना इन दो मुर्गियों के बीच गिर जाए, तो ऊपर वाली मुर्गी उसे उठा लेती है। यदि कोई दूसरी मुर्गी दाना उठाने लगे तो उनमें लड़ाई हो जाती है। लड़ाई खत्म होने के बाद जीतने वाली मुर्गी या तो लाइन में लग जाती है या फिर वहां से हट जाती है।

दाना खाने वाली मुर्गियों की तरह मनुष्यों में भी हर रोज ऐसा होता है। मुझे याद है कि जब विश्व चैंपियन डैलस कॉज़्वायस फुटबॉल टीम में एक नया प्रमुख कोच आया तो ट्रेनिंग कैंप में सहायक कोच ऊंची पदवी पाने की कोशिश कर रहे थे। स्कूल हो या कोई दूसरी जगह, हम देखते हैं कि लोग अपना रास्ता आसान करने के लिए, प्रभावशाली स्थितियां पाने के लिए लोगों को पीछे धकेलते और कंधे मारते हैं।

पौलुस हमें समझाना चाहता है कि मसीही लोग ऐसा जीवन न चुनें, हम अपनी इच्छा के अनुसार सुविधाएं जुटाने के लिए योजनाएं नहीं बनाते, मसीही लोग ऐसा खेल खेलने से इन्कार करते हैं। यीशु के दो चेलों ने एक बार ऐसा ही प्रयास किया था।

> तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से मांगें, वही तू हमारे लिए करे। उसने उनसे कहा, तुम ज़्या चाहते हो कि मैं तुज़्हारे लिए करूं? उन्होंने उस से कहा, कि हमें यह दे, कि तेरी महिमा में हममें से एक तेरे दहिने और दूसरा तेरे बाएं बैठे (मरकुस 10:35-37)।

याकूब और यूहन्ना दूसरों से ऊंचा रुतबा पाना चाहते थे। वे आने वाले राज्य में ऊपर वाली मुर्गियां बनना चाहते थे। वे सब कुछ खा जाना चाहते थे। यीशु ने तो उन्हें जीवन का एक नया ढंग दिखाना था:

> तुम जानते हो, कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उन में जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है, बरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुज़्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। ज़्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल

करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे (मरकुस 10:42ख-45)।

यीशु ने उन्हें बताया कि, ''परमेश्वर के राज्य में ऐसा नहीं होगा। पिछले समय में ऐसा होता रहा है, परन्तु यह राज्य अलग है। इस राज्य में देना लेने से धन्य है।''

आत्मा से परिपूर्ण लोग अपने ढंग से चलने पर ज़ोर नहीं देते। वे दूसरों को प्राथमिकता देते हैं। वे ''एक दूसरे के अधीन'' हैं।

5:21 फिर पढ़ें। एक दूसरे के अधीन होने के स्पष्ट उद्देश्य ''मसीह के भय से'' पर ध्यान दें। मूलत:, इसका अर्थ है ''मसीह के भय के कारण।'' *phobos* यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद ''भय'' हुआ है। इसके लिए अंग्रेजी में ''*phobia*'' शब्द मिलता है। भय का महत्व ''सम्मान'' से अधिक है। सुलैमान ने कहा है, ''परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; ज़्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्ज़व्य यही है'' (सभोपदेशक 12:13ख)। परमेश्वर का भय मानने का अर्थ *परमेश्वर को गंभीरता से लेना* है। हम ध्यान रखते हैं कि परमेश्वर कौन है और हम कौन हैं,यही हमें अपने घुटनों पर ले आता है। इससे परमेश्वर को गंभीरता से लेने का कारण पता चल जाता है। पौलुस हमें समझा रहा था कि ''एक दूसरे के अधीन होकर तुम दिखाते हो कि तुम मसीह को कितनी गंभीरता से ले रहे हो।''

दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों में हमारे लिए आवश्यक है कि एक दूसरे के अधीन रहें। ज़्या आप अपने घर में सेवक हैं ? ज़्या काम में या स्कूल में लोग आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में जानते हैं जो दूसरों से लेने के बजाय उन्हें देने को महत्व देता हो ? स्थानीय कलीसिया के लोग आपके बारे में ज़्या सोचते हैं ? ज़्या आप उस कलीसिया में इसलिए हैं कि आपको वहां से कुछ मिलता है। ज़्या आप अपने भाइयों और बहनों की आवश्यकताओं, चिंताओं और भावनाओं पर ध्यान देते हैं ?

कलीसिया एक दूसरे के अधीन होने के लिए ट्रेनिंग की जगह है। परमेश्वर हर तरह के लोगों को कलीसिया में इकट्ठे करता है। हम एक दूसरे का सम्मान करना, उसे आदर देना, और एक दूसरे के अधीन होना सीखते हैं। कलीसिया में सबसे बुरा व्यवहार सांसारिक सोच हो सकती है कि ''मेरा ढंग ही चलेगा नहीं तो मैं नहीं मानता।'' ऐसी बात करना मसीह की नहीं बल्कि संसार की आत्मा पाए होना है।

एक व्यक्तिगत टीका

इफिसियों 5:21 की सबसे अच्छी टीका फिलिप्पियों के अध्याय में मिलती है। फिलिप्पियों की पत्री पौलुस द्वारा इफिसियों की पत्री लिखने के काफी निकट समय में लिखी गई थी। स्पष्टतया, प्रारम्भिक कलीसिया के सामने भी सम्बन्धों, दूसरों के साथ मिलने और लेने के बजाय देने वाले व्यवहार से हमारे जैसी ही समस्याएं थीं। पौलुस ने लिखा:

विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से

अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, बरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे (फिलिप्पियों 2:3, 4)।

इसमें एक दूसरे के अधीन होने की अवधारणा का अर्थ मिल जाता है। अब, एक दूसरे के अधीन होने के उद्देश्य पर ध्यान दें। यह सब मसीह के लिए है।

जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (इफिसियों 2:5-11)।

एक दूसरे के अधीन दीनता से ही हो सकते हैं। यीशु ने हमें दिखाया कि दीनता ज़्या होती है। यह आत्मा से परिपूर्ण जीवन की निशानी है। बिना विनम्रता के लोगों के साथ हमारे सम्बन्ध वैसे कभी नहीं बन सकते जैसे परमेश्वर चाहता है। विनम्रता हमें सीधे चलाती है। यह हमें हठधर्मी और धर्मांध होने से बचाती है। दीनता हमें दूसरों की ज़ावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाती है। यह हमें दूसरों की कमियों को सहने और हमें स्वार्थी होने से दूर रखती है। दीनता हमें एक दूसरे तक पहुंचने में सक्षम बनाती है न कि रक्षात्मक होने वाले।

यह हमें दूसरों में कमियां ढूंढ़ने वाले होने के बजाय अनुग्रह के आत्मा से उनको देखने वाले बनाती है। दीनता हमें एक दूसरे की भलाई चाहने की प्रेरणा देती है और हमें अनुमान लगाने, गप्पें मारने तथा रुतबा पाने के लिए जोड़ तोड़ करने से दूर रखती है। दीनता मसीह के भय के कारण एक दूसरे के अधीन होना है।

हमें यह दीनता अपने घरों में, लोगों के साथ दैनिक व्यवहार में और कलीसिया में दिखानी चाहिए।

एक व्यावहारिक विचार

''मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो'' (5:21)। बड़ा स्पष्ट लगता है, या नहीं? इसे समझना व्यवहार में लाने से आसान है। आइए तीन विचारों पर ध्यान देते हैं जो हर दिन इस कार्य को बेहतर ढंग से करने में हमारे सहायक हो सकते हैं।

1. *इच्छा को अपने ढंग से बुलाएं-एक सांसारिक सोच जो यीशु की शिक्षाओं के विरुद्ध है।* सज़्भवत: हम अपनी मर्ज़ी मनवाने पर तभी ज़ोर देंगे, जब हमें यह पता न हो कि

यह वास्तव में है ज़्या।

2. *एक प्रश्न पूछकर कि प्रार्थना में हर प्रकार का सज़्बन्ध बनाएं: ''यीशु मेरे द्वारा इस व्यक्ति को ज़्या देना चाहता है?''*

3. *प्रार्थना में प्रभु के सामने हर रोज़ यह बिनती करें: ''हे प्रभु मुझे दिखा कि मैं तेरी इच्छा के अनुसार दूसरों के अधीन कहां नहीं हो रहा।''* यीशु को आपको यह देखने में सहायता देने दें कि कहां आपको दूसरों के साथ व्यवहार में कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है।

सारांश

हमारा सबसे महत्वपूर्ण सज़्बन्ध परमेश्वर के साथ ही है। हमारे लिए परमेश्वर का भय रखना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक है। यीशु के बारे में परमेश्वर ने यह घोषित कर दिया है, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो।'' परमेश्वर चाहता है कि हम यीशु की सुनकर मानें। यीशु से हमारे सही सज़्बन्ध हुए बिना जीवन में कोई और सज़्बन्ध किसी काम का नहीं हो सकता।

अपना जीवन यीशु को दें। वह हमें पापों की क्षमा और नया जीवन देने की पेशकश करता है। उसकी सुनो और उसकी मानो। यीशु ने कहा है, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (तु. मरकुस 16:15, 16)। ज़्या आपने उसकी आज्ञा मानी है?

मसीही होने के नाते, आप आयत 21 को मानते होंगे कि आपने मसीह का भय नहीं दिखाया है। शायद आप पिछले समय में अपनी मनवाने पर ज़ोर देते रहे हैं और दूसरों की कोई परवाह नहीं करते। यह एक युद्ध है। हम सब स्वार्थ से संघर्षरत हैं। प्रार्थना में प्रभु से मांगें कि वह आपको आपकी अपनी लड़ाई में सामर्थ दे। ''मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।'' एक दूसरे के अधीन वहीं हुआ जा सकता है जहां लोग आत्मा से परिपूर्ण हों।

टिप्पणी

[1]यूनानी शज़्द *hupotasso* है। सैनिक प्रासंगिकता में इसका प्रयोग बड़े अधिकारी के अधीन होने के लिए किया जाता है। इसका इस्तेमाल दासों और उनके स्वामियों के लिए भी होता था। इसमें अपने अधिकार या इच्छा का परित्याग करना भी शामिल है।